आंतरिक गुटबाजी की समस्या

2024 के लोकसभा चुनावों के मद्देनजर राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने का भी संकेत दिया है। यह संकेत चारों राज्यों के लिए है। मगर धामी के पक्ष में लिए गए फैसले का एक निहितार्थ यूपी के संदर्भ में खास तौर पर रेखांकित किया जा रहा है।

मनोज सिंह।।

उत्तराखंड में पुष्कर सिंह धामी के मुख्यमंत्री चुने जाने के साथ ही यह साफ हो गया कि बीजेपी ने चारों राज्यों में सिटिंग चीफ मिनिस्टर्स को जारी रखने का फैसला किया है। इसी के तहत गोवा में प्रमोद सावंत का नाम फाइनल हुआ। मणिपुर में एन वीरेन सिंह पहले ही मुख्यमंत्री पद की शपथ ले चुके हैं और यूपी में योगी आदित्यनाथ के नाम पर कभी कोई संदेह रहा ही नहीं। संदेह सबसे ज्यादा धामी को ही लेकर था। वजह यही थी कि उनके नेतृत्व में पार्टी ने भले बहुमत हासिल कर लिया हो, वह खुद चुनाव हार गए थे।

ऐसा ही एक मामला 2017 में हिमाचल प्रदेश में आया था, जहां बीजेपी को जिताकर भी पार्टी के सीएम कैंडिडेट प्रेम सिंह धूमल खुद अपनी सीट नहीं बचा पाए। तब जयराम ठाकुर को मुख्यमंत्री का पद मिला था। मगर अभी हालात अलग हैं। उत्तराखंड में धामी छह महीने के अंतराल में तीसरे मुख्यमंत्री थे। पार्टी के इन प्रयोगों ने यह संकेत दिया था कि बीजेपी नेतृत्व राज्य में राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने के सवाल को खास अहमियत नहीं दे रहा। इन प्रयोगों ने पार्टी में पूर्व मुख्यमंत्रियों की संख्या बढ़ाकर आंतरिक गुटबाजी की समस्या को भी और बढ़ा दिया था। ऐसे में मुख्यमंत्री के रूप में पुष्कर सिंह धामी के नाम पर सहमति देकर आलाकमान ने जहां पार्टी की आंतरिक गुटबाजी खत्म करने की इच्छा दिखाई है, वहीं 2024 के लोकसभा चुनावों के मद्देनजर राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने का भी संकेत दिया है। यह संकेत चारों राज्यों के लिए है। मगर धामी के पक्ष में लिए गए फैसले का एक निहितार्थ यूपी के संदर्भ में खास तौर पर रेखांकित किया जा रहा है। वहां योगी सरकार के पिछले कार्यकाल में उपमुख्यमंत्री रहे केशव प्रसाद मौर्य चुनाव हार गए हैं। उन्हें राज्य में ओबीसी का प्रमुख चेहरा बताया जाता रहा है। ऐसे में यह बताने की कोशिश शुरू हो गई है कि धामी को दोबारा मुख्यमंत्री बनाने का मतलब है, मौर्य को भी उपमुख्यमंत्री बनाया जाएगा। मगर दोनों बिल्कुल अलग मामले हैं।

चारों राज्यों में मुख्यमंत्री पद पर बदलाव न करने के फैसले का यह मतलब नहीं निकाला जा सकता कि मुख्यमंत्री की टीम में भी कोई बदलाव नहीं किया जाएगा। बेशक यह संभावना बनी हुई है कि योगी मंत्रिमंडल में केशव प्रसाद मौर्य को उपमुख्यमंत्री पद दोबारा मिल जाए, लेकिन अगर ऐसा हुआ भी तो वह एक अलग फैसला होगा, जिसके पीछे बिल्कुल अलग तरह के कारक काम कर रहे होंगे। बहरहाल, नई पारी में इन मुख्यमंत्रियों के सामने चुनौतियां भी नई होंगी। उम्मीद की जाए कि वे इन चुनौतियों से पिछली पारी के मुकाबले बेहतर ढंग से निपटते हुए आम वोटरों के फैसले को सार्थक साबित करेंगे।

यतो धर्मस्ततो जय

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। इस्लाम धर्म पैगंबर मुहम्मद द्वारा, ईसाई धर्म ईसा–मसीह द्वारा और बौद्ध धर्म महात्मा बुद्ध द्वारा आदि। क्योंकि सभी अनुयायियों को धर्म के चलाने वाले पर विश्वास लाना आवश्यक है। अतरू ये धर्म नहीं, मत है। ये सब मत वैज्ञानिक भी नहीं है, जबकि धर्म और विज्ञान का आपस में अभिन्न संबंध है।

जहाँ धर्म है वहाँ विज्ञान है। देखो, बाइबिल में सूर्य को पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करना बताया है जबकि वेद कहता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों जल सहित घूमती है। इतना ही नहीं विज्ञान का कोई भी क्षेत्र हो, वेदों से नहीं छूटा। अतः जो मत विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, वे धर्म भी नहीं है। गीता में श्रीकृष्ण जी कहते है कि 'यतो धर्मस्ततो जय' अर्थात जहाँ धर्म है वहाँ विजय है आगे आता है कि 'वेदोखिलो धर्ममुलं' अर्थात वेद धर्म का मूल है।

संपादकीय

क्रिप्टो में निवेश

भारत सरकार ने पाबंदी से परहेज करते हुए अभी क्रिप्टो में निवेश पर भारी टैक्स थोपकर इस चलन को हतोत्साहित करने वाले कदम उठाए हैं। लेकिन मुश्किल यह है कि इससे तो सरकार पर ब्लॉकचेन तकनीक के रास्ते में अड़चन डालने का आरोप लगता है। दूसरी तरफ अगर वह इसकी इजाजत देती है कि सवाल यह है कि सरकार क्रिप्टो के संचालन और नियमन का काम कैसे करेगी। ऐसा करने पर उसे खुद किसी व्यापारी की भूमिका में आना होगा– हर सरकारी काम के निजीकरण में जुटी सरकार के लिए ऐसा करना आसान नहीं होगा। भारत अकेला ऐसा देश नहीं है जहां क्रिप्टोकरेंसी की उठापटक और प्रचलन चिंता की वजह बना है। कुछ ही समय पहले इंडोनेशिया की नेशनल उलेमा काउंसिल (एमयूआई) ने क्रिप्टोकरेंसी को हराम या प्रतिबंधित घोषित किया है। पड़ोसी चीन ने भी बिटकॉइन और इस जैसी अन्य आभासी मुद्राओं के सृजन और लेनदेन पर रोक लगाई है। सरकारों, केंद्रीय बैंकों और समाजशास्त्रियों की सबसे बड़ी चिंता अब यह है कि कहीं क्रिप्टो को लेकर मची यह सनसनी वर्ष 2000 के डॉटकॉम बबल जैसी न साबित हो। ध्यान रहे कि सरकारी मुद्राओं से बाहर किसी भी चीज में निवेश उसके मौलिक या आधारभूत मूल्य (फंडामेंटल वैल्यू) से तय होता है। इस मूल्यांकन में फंडामेंटल वैल्यू ऐसी रकम होती है, जिसके आधार पर किसी संपत्ति के पैदा होने की उम्मीद रखी जाती है। लेकिन क्रिप्टो के मामले में स्वर्ण या शेयर में निवेश और सरकारी मुद्राओं जैसे आश्वासन नहीं हैं। इनमें फंडामेंटल वैल्यू तय करने का कोई आधार या इनके एवज में दी जाने वाली संपत्ति मौजूद नहीं है।

इसी तबके के बीच से इधर के बरसों में एक नई पीढ़ी उभरी है, जिसने पैसा कमाने के अलहदा गुर सीखे हैं। इस पीढ़ी ने पैसे को नई शक्ल में देखना शुरू किया है। ऐसा पैसा जो स्मार्टफोन पर एक क्लिक से पैदा हो रहा है।

कंप्यूटर से गढ़ी गई दौलत

संजय वर्मा।।

हमें नहीं मालूम कि पैसा कितनी बड़ी नेमत है पर तमाम खुशियों का खरीदार इसे माना जाता है। आप धन–कुबेर हैं तो कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है कि वह (पैसा) कहां से आया– कहां चला गया। पर दुनिया भर का गरीब और मध्यवर्ग पैसे की जद्दोजहद में ही पूरी जिंदगी खर्च कर देता है। इसे सिर्फ जीने के लिए जीना कहते हैं। अलबत्ता इसी तबके के बीच से इधर के बरसों में एक नई पीढ़ी उभरी है, जिसने पैसा कमाने के अलहदा गुर सीखे हैं। इस पीढ़ी ने पैसे को नई शक्ल में देखना शुरू किया है। ऐसा पैसा जो स्मार्टफोन पर एक क्लिक से पैदा हो रहा है।

यह पैसा वर्चुअल है, लेकिन कीमती है। कीमत भी ऐसी कि जिसके बारे में दावा है कि एक ही रात में हजारों गुना बढ़ जाती है। यूं कई मर्तबा साइबर फ्रॉड की बदौलत यह दौलत एक ही क्लिक पर स्वाहा भी हो जाती है। या रातोंरात अर्श से फर्श पर आ जाती है। यह क्रिप्टो है। यानी कंप्यूटर से गढ़ी गई दौलत। इसे सरकारें भले मान्यता न दें लेकिन दुनिया भर में बरास्ता इंटरनेट तमाम सौदे निपटाने में इसका इस्तेमाल होने लगा है। कई तरह की जालसाजियों के केंद्र में भी यही दौलत है। फिलहाल दुनिया भर की नौजवान पीढ़ी को इसने पैसा कमाने के

बेहद आसान जरिये के रूप में सम्मोहित कर रखा है। खासतौर से उस जनरेशन के लिए क्रिप्टो एक मुंहमांगी मुराद की तरह लगती है जिसे हाथ–पांव चलाए बिना पैसा बनाने या इसके रास्ते खोजने की राह आसान लगती है। ऐसी पीढ़ी के लिए अंग्रेजी में एक नए शब्द की ईजाद हुई है– जनेरेशन नोव्हेयर। यानी हकीकत की दुनिया से रूबरू होने की बजाय यह पीढ़ी स्मार्टफोन के माध्यम से सारी दुनिया और दुनियावी बातों को जान–समझ लेना चाहती है। चूंकि तमाम दुनियादारी के केंद्र में पैसा है, इसलिए पैसे को भी यह पीढ़ी मोबाइल के सहारे ही कमाने में ज्यादा यकीन करने लगी है। लेकिन स्मार्टफोन से पैदा हुई तमाम समस्याओं की तरह ही वर्चुअल पैसा हासिल करने की प्रवृत्ति युवाओं को एक अनदेखी डिजिटल बीमारी की तरफ धकेल रही है। स्मार्टफोन के इस्तेमाल होने वाले व्यावहारिक व्यसन (बिहैवियरल एडिक्शन) की जिस समस्या की तरफ विशेषज्ञ कुछ समय से संकेत कर रहे हैं, उसमें क्रिप्टो करेंसी ने एक आयाम जोड़ दिया है। भले ही हमारी सरकार ने क्रिप्टो माइनिंग, उसकी खरीद–फरोख्त और इसमें हुई कमाई पर टैक्स संबंधी कोई रियायत नहीं बरती है। पर इससे क्रिप्टो के क्रेज में कोई कमी नहीं आई है। बल्कि इसने युवाओं में एक किस्म की लत (बिहैवियरल एडिक्शन) पैदा कर दी है।

क्रिप्टो के जरिए ऐसा क्यों हो रहा होगा, इसे समझने के लिए क्रिप्टो करेंसी के स्वभाव को समझना होगा। असल में ये आभासी मुद्राएं अपने स्वभाव में अस्थिर हैं। ऐसे में इनमें पैसा झोंकने वाले युवा हर समय चिंताग्रस्त रहते हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि इन मुद्राओं में मिलने वाला लाभ कई बार चंद मिनटों में ही स्वाहा हो जाता है। यही वह ट्रिगर पॉइंट है, जहां पहुंचकर क्रिप्टो करेंसी में पैसा लगाने वाले हजारों–लाखों युवाओं की जिंदगी किसी रोलर–कोस्टर की सवारी जैसी हो जाती है। अकारण नहीं है कि स्कॉटलैंड के एक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र कैसल क्रेग ने हाल ही में दुनिया में क्रिप्टो करेंसी की खरीद–फरोख्त की बढ़ती लत को नए जमाने की महामारी घोषित किया है। पर यहां सवाल है कि पाबंदी इस डिजिटल महामारी का सही इलाज है।

सूडोकु नवताल-5382

सरल

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5381 का हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

युवाओं को भावनात्मक संकट में डाल रहा

मोहन। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरों के आंकड़ों के हवाले से केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने राज्यसभा में बताया कि वर्ष 2020 में बेरोजगारी से आत्महत्या करने वालों की संख्या 2019 के मुकाबले 24 प्रतिशत ज्यादा थी। आंकड़े साबित करते हैं कि 2018, 2019 और 2020 के दौरान देश में बेरोजगारी की वजह से 9,140 लोगों ने आत्महत्या कर ली। उल्लेखनीय यह है कि इन तीन वर्षों के दौरान दिवालिया होने और कर्ज के चलते 16,091 लोगों ने आत्महत्या की। हालांकि अभी इन आत्महत्याओं की सटीक वजहों का पता चलना बाकी है, लेकिन अंदाजा लगाया जा सकता है कि स्टार्टअप में नाकामी और क्रिप्टो में निवेश का स्वाहा हो जाना युवाओं को आत्महंता बनने के लिए प्रेरित कर रहा होगा। क्रिप्टो करेंसी की कीमतों में उतार–चढ़ाव की अटकलों में उलझे और अपने निवेश के चुटकियों में कई गुना हो जाने का ख्वाब इन युवाओं को भावनात्मक संकट में डाल रहा है।